मुद्रा और बैंकिंग

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» मुद्रा का परिचय और कार्य

प्रश्न 1 (आसान). निम्नलिखित में से कौन मुद्रा का कार्य नहीं है: विनिमय का माध्यम, मूल्य संचय का माध्यम, उत्पादन का माध्यम, लेखा की इकाई?

उत्तर – उत्पादन का माध्यम

प्रश्न 2 (आसान). क्या वस्तु विनिमय प्रणाली में 'double coincidence of wants' ज़रूरी था?

उत्तर – हाँ, बिल्कुल।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर हम हर चीज़ की कीमत रुपये में मापते हैं, तो मुद्रा का कौन सा कार्य हो रहा है?

उत्तर – लेखा की इकाई (Unit of Account)

प्रश्न 4 (कठिन). आप अपना मूल्य भविष्य के लिए बचाकर रखना चाहते हैं। आप टमाटर के बदले पैसे क्यों चुनेंगे?

उत्तर – क्योंकि टमाटर जल्दी खराब हो जाते हैं (perishable), जबकि पैसे खराब नहीं होते और आसानी से रखे जा सकते हैं (store of value)।

» मुद्रा की मांग: संव्यवहार और सट्टा उद्देश्य

प्रश्न 5 (आसान). मुद्रा की मांग के दो मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर – संव्यवहार उद्देश्य और सट्टा उद्देश्य।

प्रश्न 6 (आसान). जब आपकी आय बढ़ती है, तो संव्यवहार उद्देश्य से मुद्रा की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर – आय बढ़ने पर संव्यवहार उद्देश्य से मुद्रा की मांग बढ़ती है।

प्रश्न 7 (मध्यम). ब्याज दरें बढ़ने पर लोग अपने पास कम नकद क्यों रखना चाहते हैं?

उत्तर – ब्याज दरें बढ़ने पर लोग अपने पास कम नकद रखना चाहते हैं क्योंकि बैंक में पैसा जमा करने पर उन्हें ज़्यादा ब्याज मिलता है, और नकद रखने पर कोई कमाई नहीं होती।

प्रश्न 8 (कठिन). यदि सरकार कैशलेस इकॉनमी को बढ़ावा दे और डिजिटल लेन-देन को आसान बनाए, तो संव्यवहार उद्देश्य से मुद्रा की मांग पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है? अपने जवाब का कारण भी बताएं।

उत्तर – यदि सरकार कैशलेस इकॉनमी को बढ़ावा देती है और डिजिटल लेन-देन को आसान बनाती है, तो संव्यवहार उद्देश्य से नकद मुद्रा की मांग में दीर्घकालिक कमी आ सकती है। इसका कारण यह है कि लोग अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए नकद के बजाय डिजिटल माध्यमों (जैसे UPI, डेबिट/क्रेडिट कार्ड) का उपयोग करेंगे, जिससे उन्हें भौतिक रूप से पैसा अपने पास रखने की कम ज़रूरत पड़ेगी।

» मुद्रा की पूर्ति और इसके माप

प्रश्न 9 (आसान). मुद्रा की पूर्ति में क्या शामिल होता है?

उत्तर – जनता के पास करेंसी और बैंक जमाएँ।

प्रश्न 10 (आसान). M1 माप में कौन से घटक शामिल होते हैं?

उत्तर – जनता के पास करेंसी, मांग जमाएँ और RBI के पास अन्य जमाएँ।

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर जनता के पास करेंसी 1000 करोड़ और मांग जमाएँ 700 करोड़ हों, तो M1 कितना होगा?
उत्तर – 1700 करोड़ रुपये (RBI की अन्य जमाएँ 0 मानते हुए)।

प्रश्न 12 (कठिन). मुद्रा की पूर्ति के विभिन्न मापों (M1, M2, M3, M4) में तरलता (liquidity) के आधार पर क्या अंतर है?
उत्तर – M1 सबसे ज़्यादा तरल है, फिर M2, M3 और M4 सबसे कम तरल है। तरलता का मतलब है कि कोई चीज़ कितनी आसानी से कैश में बदल सकती है।

» केंद्रीय बैंक और व्यावसायिक बैंक की भूमिका

प्रश्न 13 (आसान). भारत के केंद्रीय बैंक का क्या नाम है?
उत्तर – रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI)

प्रश्न 14 (आसान). व्यावसायिक बैंक का एक मुख्य कार्य क्या है?
उत्तर – जनता से जमा स्वीकार करना या ऋण देना।

प्रश्न 15 (मध्यम). केंद्रीय बैंक 'मुद्रा पूर्ति को नियंत्रित' कैसे करता है? (संक्षेप में)
उत्तर – यह विभिन्न उपायों जैसे बैंक दर, खुले बाजार की क्रियाओं आदि द्वारा अर्थव्यवस्था में पैसे की मात्रा को घटाता या बढ़ाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). अगर भारत में नोट छापने का काम सिर्फ RBI के पास न होकर कई बैंकों के पास होता, तो अर्थव्यवस्था पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता था?
उत्तर – इससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा बहुत बढ़ जाती, जिससे अत्यधिक महंगाई (inflation) हो सकती थी। साथ ही, बैंकिंग व्यवस्था में अराजकता फैल सकती थी और मुद्रा का मूल्य अस्थिर हो सकता था।

» बैंकिंग व्यवस्था द्वारा साख सृजन

प्रश्न 17 (आसान). साख सृजन की प्रक्रिया में बैंक जमा राशि का कुछ प्रतिशत अपने पास क्यों रखते हैं?
उत्तर – यह केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित आरक्षित अनुपात (जैसे CRR) होता है, ताकि जमाकर्ताओं की नकद निकासी की मांग पूरी की जा सके।

प्रश्न 18 (आसान). क्या बैंक अपनी जेब से पैसा निकालकर लोन देते हैं?
उत्तर – नहीं, वे मुख्य रूप से जमाकर्ताओं के पैसे को ही 'घूमते' हुए लोन देते हैं, जिससे नए जमा बनते हैं और इस तरह वे साख का सृजन करते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). यदि CRR 10% से बढ़कर 20% हो जाए, तो साख सृजन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – साख सृजन की मात्रा कम हो जाएगी क्योंकि बैंक को ज़्यादा पैसा आरक्षित रखना पड़ेगा और कम लोन दे पाएगा।

प्रश्न 20 (कठिन). मान लीजिए प्रारंभिक जमा ₹2000 है और CRR 25% है। अर्थव्यवस्था में कुल कितना पैसा सृजित होगा?
उत्तर – कुल पैसा सृजित होगा = ₹2000 × (1 / 0.25) = ₹2000 × 4 = ₹8000।

» बैंक का चिट्ठा और मुद्रा गुणक

प्रश्न 21 (आसान). यदि नकद कोष अनुपात 10% है, तो मुद्रा गुणक कितना होगा?
उत्तर – 10

प्रश्न 22 (आसान). CRR का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – नकद कोष अनुपात (Cash Reserve Ratio)

प्रश्न 23 (मध्यम). यदि प्रारंभिक जमा 500 रुपये है और CRR 20% है, तो अधिकतम साख सृजन कितना होगा?
उत्तर – 2,500 रुपये

प्रश्न 24 (कठिन). यदि एक बैंक ने कुल 8,000 रुपये की साख का सृजन किया है और मुद्रा गुणक 4 है, तो प्रारंभिक जमा कितनी थी?
उत्तर – 2,000 रुपये

» मुद्रा पूर्ति के नियंत्रण के नीतिगत उपकरण

प्रश्न 25 (आसान). 'बैंक दर' का मतलब क्या है?
उत्तर – वह दर जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को लंबी अवधि के लिए ऋण देती है।

प्रश्न 26 (आसान). 'खुले बाजार की क्रियाएँ' क्या होती हैं?
उत्तर – सरकारी प्रतिभूतियों (Government Securities) की खरीद-बिक्री।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर RBI 'रेपो दर' कम कर दे, तो अर्थव्यवस्था पर क्या असर होगा?
उत्तर – वाणिज्यिक बैंकों को RBI से पैसा सस्ता मिलेगा, वे आगे सस्ती दर पर लोन देंगे, जिससे मुद्रा पूर्ति बढ़ेगी।

प्रश्न 28 (कठिन). 'नैतिक दबाव' (Moral Suasion) और 'सीमांत आवश्यकता' (Margin Requirement) किस प्रकार के उपकरण हैं और वे कैसे काम करते हैं?
उत्तर – ये दोनों 'गुणात्मक उपकरण' हैं। नैतिक दबाव में RBI बैंकों को सलाह देती है कि वे किन क्षेत्रों को प्राथमिकता दें या किन क्षेत्रों को ऋण न दें। सीमांत आवश्यकता में ऋण के बदले रखी गई संपत्ति के मूल्य का वह अनुपात तय किया जाता है जो बैंक ऋण के रूप में नहीं दे सकते। जैसे, अगर 1 लाख की संपत्ति पर 20% सीमांत आवश्यकता है, तो बैंक अधिकतम 80,000 का ही ऋण दे सकता है। इसे बढ़ाकर RBI ऋण को हतोत्साहित कर सकती है।

» तरलता पाश और ब्याज दर

प्रश्न 29 (आसान). तरलता पाश की स्थिति में ब्याज दरें कैसी होती हैं? (कम/ज्यादा)
उत्तर – बहुत कम

प्रश्न 30 (आसान). तरलता पाश में लोग बॉन्ड खरीदते हैं या नकदी रखते हैं?
उत्तर – नकदी रखते हैं

प्रश्न 31 (मध्यम). तरलता पाश में मुद्रा की सट्टा मांग कैसी हो जाती है?
उत्तर – अनंत (infinite) हो जाती है।

प्रश्न 32 (कठिन). तरलता पाश की स्थिति में केंद्रीय बैंक के लिए मौद्रिक नीति क्यों अप्रभावी हो जाती है?
उत्तर – क्योंकि लोग ब्याज दरें कितनी भी कम हों, सारा पैसा नकद में ही रख लेते हैं, जिससे मुद्रा की आपूर्ति बढ़ने पर भी निवेश नहीं बढ़ता और अर्थव्यवस्था को कोई फायदा नहीं होता।

» विमुद्रीकरण

प्रश्न 33 (आसान). विमुद्रीकरण का अर्थ क्या है?
उत्तर – जब सरकार किसी मुद्रा नोट का कानूनी दर्जा समाप्त कर देती है।

प्रश्न 34 (आसान). भारत में किस वर्ष विमुद्रीकरण हुआ था, जिसमें ₹500 और ₹1000 के नोट बंद किए गए थे?
उत्तर – नवंबर 2016

प्रश्न 35 (मध्यम). विमुद्रीकरण के दो मुख्य उद्देश्य क्या हो सकते हैं?
उत्तर – भ्रष्टाचार और काला धन रोकना, नकली मुद्रा पर लगाम लगाना।

प्रश्न 36 (कठिन). विमुद्रीकरण के अल्पकालिक (short-term) और दीर्घकालिक (long-term) प्रभावों में क्या अंतर हो सकता है?

उत्तर – अल्पकालिक में नकदी की कमी, आर्थिक गतिविधियों में ठहराव; दीर्घकालिक में कर अनुपालन में सुधार, डिजिटल लेनदेन में वृद्धि।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. श्याम को अपनी पुरानी साइकिल बेचकर एक नई किताब खरीदनी है। मुद्रा के बिना उसे किस समस्या का सामना करना पड़ेगा? मुद्रा इस समस्या को कैसे हल करती है?

› पहला चरण: मुद्रा के बिना श्याम को 'दोहरे संयोग की आवश्यकता' (double coincidence of wants) की समस्या का सामना करना पड़ेगा। उसे एक ऐसे व्यक्ति को खोजना होगा जिसे उसकी पुरानी साइकिल चाहिए हो, और जिसके पास वह नई किताब हो जो श्याम खरीदना चाहता है।

› दूसरा चरण: यह बहुत मुश्किल और समय लेने वाला काम होगा क्योंकि ज़रूरी नहीं कि ऐसा व्यक्ति आसानी से मिले।

› तीसरा चरण: मुद्रा इस समस्या को 'विनिमय के माध्यम' के रूप में हल करती है। श्याम अपनी साइकिल को किसी भी व्यक्ति को बेच सकता है जो उसे खरीदना चाहेगा, और बदले में पैसे ले लेगा।

› चौथा चरण: फिर वह उन पैसों का उपयोग किसी भी किताब की दुकान से नई किताब खरीदने के लिए कर सकता है, भले ही किताब बेचने वाले को साइकिल की ज़रूरत न हो। इस तरह, मुद्रा ने लेन-देन को आसान बना दिया।

उत्तर – मुद्रा के बिना श्याम को दोहरे संयोग की आवश्यकता की समस्या का सामना करना पड़ेगा, जिसे मुद्रा 'विनिमय के माध्यम' के रूप में हल करती है।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक व्यक्ति की मासिक आय 20,000 रुपये है और वह अपनी आय का 20% संव्यवहार उद्देश्यों के लिए और 10% सट्टा उद्देश्यों के लिए नकद रखता है। यदि ब्याज दरें बढ़ जाती हैं, तो उसके सट्टा उद्देश्य से मुद्रा की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

› पहले संव्यवहार उद्देश्य से मुद्रा की मांग निकालेंगे: 20,000 रुपये का 20% = 4,000 रुपये।

› अब सट्टा उद्देश्य से मुद्रा की मांग निकालेंगे (शुरू में): 20,000 रुपये का 10% = 2,000 रुपये।

› अब प्रश्न में कहा गया है कि ब्याज दरें बढ़ जाती हैं। हमने सीखा है कि 'उफँची ब्याज दरों पर, मुद्रा की माँग गिर जाती है' जब बात सट्टा उद्देश्य की हो।

› इसलिए, व्यक्ति अब सट्टा उद्देश्यों के लिए अपने पास कम नकद रखेगा, क्योंकि वह ज़्यादा ब्याज कमाने के लिए पैसा बैंक में जमा करना चाहेगा।

उत्तर – ब्याज दरें बढ़ने पर, व्यक्ति की सट्टा उद्देश्य से मुद्रा की मांग घट जाएगी। वह ₹2,000 से कम नकद अपने पास रखेगा, क्योंकि बैंक में जमा करने पर उसे अधिक ब्याज मिलेगा।

उदाहरण 3. मान लीजिए एक देश में जनता के पास 500 करोड़ रुपये के नोट और सिक्के हैं, बैंकों में मांग जमा (Demand Deposits) 300 करोड़ रुपये हैं, और अन्य जमाएँ (Other Deposits with RBI) 20 करोड़ रुपये हैं। M1 का मान ज्ञात करें।

› M1 का सूत्र है: जनता के पास करेंसी (Currency with Public) + मांग जमाएँ (Demand Deposits) + RBI के पास अन्य जमाएँ (Other Deposits with RBI).

› जनता के पास करेंसी = 500 करोड़ रुपये।

› मांग जमाएँ = 300 करोड़ रुपये।

› RBI के पास अन्य जमाएँ = 20 करोड़ रुपये।

› M1 = 500 करोड़ + 300 करोड़ + 20 करोड़।

उत्तर – M1 = 820 करोड़ रुपये।

उदाहरण 4. मान लीजिए, भारत में नोटों को छापने और उसे अर्थव्यवस्था में जारी करने का काम किस संस्था का है? और क्या कोई दूसरा बैंक भी यह काम कर सकता है?

› पहला चरण: हमें यह पहचानना होगा कि भारत में मुद्रा (नोटों) के निर्गमन का अधिकार किसके पास है।

› दूसरा चरण: हमने अभी पढ़ा कि यह काम 'केंद्रीय बैंक' का होता है।

› तीसरा चरण: भारत का केंद्रीय बैंक 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' (RBI) है।

› चौथा चरण: यह भी याद रखना है कि यह एक विशिष्ट अधिकार है जो केवल केंद्रीय बैंक के पास होता है।

उत्तर – भारत में नोटों को छापने और अर्थव्यवस्था में जारी करने का काम केवल 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' (RBI) का है। कोई दूसरा व्यावसायिक बैंक या अन्य संस्था यह काम नहीं कर सकती।

उदाहरण 5. मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था में प्रारंभिक जमा (Initial Deposit) ₹1000 है और नकद आरक्षित अनुपात (Cash Reserve Ratio, CRR) 20% है। कुल कितनी साख का सृजन होगा?

› पहला चरण: प्रारंभिक जमा ₹1000 बैंक में आते हैं।

› दूसरा चरण: बैंक 20% CRR के अनुसार ₹1000 का 20% = ₹200 अपने पास आरक्षित रखता है।

› तीसरा चरण: बचे हुए ₹800 को बैंक 'लोन' के रूप में दे देता है। जिसको लोन मिला, वह ₹800 किसी और बैंक में या उसी बैंक में फिर से जमा कर देता है। ये 'व्युत्पन्न जमा' (Derived Deposit) कहलाती है।

› चौथा चरण: अब बैंक इन ₹800 का 20% = ₹160 आरक्षित रखता है और बाकी ₹640 को फिर से लोन दे देता है।

› यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कुल जमाओं में वृद्धि शून्य न हो जाए।

› कुल साख सृजन का सूत्र: प्रारंभिक जमा × (1 / CRR)

› कुल साख सृजन = ₹1000 × (1 / 0.20)

उत्तर – कुल साख सृजन = ₹1000 × 5 = ₹5000 होगा। यानि ₹1000 के प्रारंभिक जमा से कुल ₹5000 की साख (जमा) का सृजन हुआ।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक अर्थव्यवस्था में कुल प्रारंभिक जमा 1,000 रुपये है और नकद कोष अनुपात (CRR) 25% है। ज्ञात कीजिए कि कुल कितनी साख का सृजन हो सकता है?

› सबसे पहले, हम 'मुद्रा गुणक' की गणना करेंगे। सूत्र है: मुद्रा गुणक = 1 / नकद कोष अनुपात।

› इस केस में, नकद कोष अनुपात 25% है, जिसे हम 0.25 के रूप में लिखेंगे।

› तो, मुद्रा गुणक = 1 / 0.25 = 4।

› अब, कुल साख सृजन निकालने के लिए, हम प्रारंभिक जमा को मुद्रा गुणक से गुणा करेंगे।

› कुल साख सृजन = प्रारंभिक जमा × मुद्रा गुणक = 1,000 रुपये × 4 = 4,000 रुपये।

उत्तर – कुल 4,000 रुपये की साख का सृजन हो सकता है।

उदाहरण 7. मान लीजिए RBI को अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति कम करनी है। वह 'बैंक दर' और 'CRR' का उपयोग कैसे करेगी?

› पहला कदम: 'बैंक दर' (Bank Rate) बढ़ाना। जब RBI 'बैंक दर' बढ़ाती है, तो इसका मतलब है कि 'वाणिज्यिक बैंकों' (Commercial Banks) को RBI से पैसे उधार लेना 'महँगा' पड़ता है। इसका सीधा असर यह होता है कि वाणिज्यिक बैंक भी आगे ग्राहकों को जो 'ऋण' (Loans) देते हैं, उनकी ब्याज दरें बढ़ा देते हैं। लोग फिर कम लोन लेते हैं, और इस तरह अर्थव्यवस्था में 'मुद्रा पूर्ति कम' हो जाती है।

› दूसरा कदम: 'CRR' (Cash Reserve Ratio) बढ़ाना। जैसा कि हमने पहले पढ़ा है, 'CRR' वह अनुपात है जो वाणिज्यिक बैंकों को 'RBI' के पास 'नकद' (Cash) के रूप में रखना पड़ता है। जब RBI 'CRR' बढ़ाती है, तो बैंकों को अपनी 'कुल जमाओं' (Total Deposits) का 'बड़ा हिस्सा' RBI के पास रखना पड़ता है। इससे बैंकों के पास 'ऋण देने के लिए कम पैसा' बचता है, जिससे 'साख सृजन' (Credit Creation) घट जाता है और 'मुद्रा पूर्ति' कम हो जाती है।

› तो, इन दोनों तरीकों से RBI 'मुद्रा पूर्ति' को 'कम' कर सकती है।

उत्तर – मुद्रा पूर्ति कम करने के लिए RBI 'बैंक दर' और 'CRR' दोनों को बढ़ाएगी।

उदाहरण 8. एक अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें 0.5% तक गिर गई हैं। लोग बॉन्ड खरीदने के बजाय नकदी क्यों रखना पसंद करेंगे? इस स्थिति का नाम क्या है?

› जब ब्याज दरें 0.5% (बहुत कम) होती हैं, तो लोगों को लगता है कि भविष्य में ब्याज दरें बढ़ेंगी।

› अगर ब्याज दरें बढ़ेंगी, तो बॉन्ड की कीमतें गिरेंगी (ब्याज दर और बॉन्ड की कीमत में विपरीत संबंध होता है)।

› इसलिए, लोग अभी बॉन्ड नहीं खरीदना चाहेंगे, बल्कि अपने पास नकदी रखना पसंद करेंगे ताकि भविष्य में जब बॉन्ड सस्ते हों, तब खरीद सकें और पूंजीगत लाभ कमा सकें।

› यह स्थिति, जहाँ ब्याज दरें इतनी कम हो जाती हैं कि लोग निवेश के बजाय नकदी रखना पसंद करते हैं और सट्टा मांग अनंत हो जाती है, 'तरलता पाश' (Liquidity Trap) कहलाती है।

उत्तर – इस स्थिति को तरलता पाश कहते हैं, जहाँ लोग ब्याज दरों में भविष्य में वृद्धि की उम्मीद के कारण नकदी रखना पसंद करते हैं।

उदाहरण 9. मान लीजिए सरकार ने अचानक घोषणा की कि सभी ₹100 के नोट अब लीगल टेंडर नहीं रहेंगे। इसका क्या मतलब होगा और इसका अर्थव्यवस्था पर एक छोटा प्रभाव क्या हो सकता है?

› सबसे पहले, 'विमुद्रीकरण' का मतलब है कि ₹100 के नोटों का 'legal tender status' समाप्त हो जाएगा।

› यानी, इन नोटों से अब कोई भी सामान्य लेनदेन नहीं किया जा सकेगा, आप उनसे कुछ खरीद या बेच नहीं पाएंगे।

› लोगों को इन नोटों को बैंकों में जमा करना होगा या सरकार द्वारा निर्धारित किसी अन्य तरीके से बदलना होगा।

› एक छोटा प्रभाव यह हो सकता है कि 'short-term disruption in economic activities' - यानी कुछ समय के लिए आर्थिक गतिविधियों में थोड़ी बाधा आ सकती है क्योंकि लोग नए नोटों के लिए भागदौड़ करेंगे और नकदी की कमी हो सकती है।

उत्तर – ₹100 के नोटों का कानूनी दर्जा समाप्त हो जाएगा, वे अब वैध मुद्रा नहीं रहेंगे और अर्थव्यवस्था में कुछ समय के लिए नकदी की कमी से आर्थिक गतिविधियों में बाधा आ सकती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में M1 के घटकों और मुद्रा की पूर्ति की परिभाषा पर सीधा सवाल अक्सर पूछा जाता है। इसे अच्छे से याद करना।

• केंद्रीय बैंक और व्यावसायिक बैंक के कार्यों में अंतर को अच्छे से याद रखना, यह अक्सर बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछा जाता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साख सृजन की प्रक्रिया, गुणक सूत्र और CRR/SLR के प्रभाव पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे उदाहरण के साथ अच्छे से समझ लें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'मुद्रा गुणक' का सूत्र और उसकी गणना पर आधारित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। CRR और SLR की परिभाषाएं और उनके बीच का अंतर भी अच्छे से तैयार कर लेना।

• यह 'तरलता पाश' की अवधारणा अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में 3-4 अंकों के प्रश्न के रूप में पूछी जाती है। इसका रेखाचित्र बनाना और सट्टा मांग के साथ इसके संबंध को समझाना ज़रूरी है।

• विमुद्रीकरण से जुड़े सवाल बोर्ड परीक्षा में अक्सर इसके उद्देश्य, भारत में इसके उदाहरण (2016), और अर्थव्यवस्था पर इसके सकारात्मक/नकारात्मक प्रभावों पर आते हैं, इसलिए इन बिंदुओं को अच्छे से याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› मुद्रा पूर्ति = करेंसी + जमाएँ (M1, M2, M3, M4 मापें)

› केंद्रीय बैंक (RBI) नोट छापता, मुद्रा नियंत्रित करता; व्यावसायिक बैंक जमा स्वीकार कर ऋण देते, साख बनाते।

› बैंक जमाओं से ऋण देकर साख का सृजन करते हैं, गुणक प्रभाव से मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है।

› बैंक का चिट्ठा, CRR/SLR, मुद्रा गुणक (1/CRR) साख सृजन की सीमा तय करते हैं।
› तरलता पाश: ब्याज दरें बहुत कम, सट्टा मांग अनंत, लोग नकदी रखना पसंद करते हैं।
› विमुद्रीकरण = करेंसी नोटों का कानूनी दर्जा रद्द करना, काला धन रोकने हेतु।